BANGALORE

तुलसी राम कथा

Gandhi Smarak Nidhi
Karnatak Shakha
138, NEHRU CIRCLE
BANGALORE-3.

राम-विवाह

W3N56
H.000782

तुलसी-राम-कथा—३

CC0782

राम-विवाह

विश्वम्भरसहाय 'प्रेमी'

TATTVA PRACHAR CENTRE
BANGALORE

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE
ACC. No. 9189
CALL No.
BANGALORE-1.

तुलसीदासजी के 'रामचरित-
मानस' के आधार पर
भगवान् राम की
सरल एवं रोचक कहानी

सत्साहित्य प्रकाशन

१९५६

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

H·000782
O152,1 TUL
W3N56

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE....................
A. No............................
CALL No.....................
BANGALORE-1.

पहली बार : १९५६
मूल्य
छः आना

मुद्रक
सुरेन्द्र प्रिंटर्स प्राइवेट लि०,
दिल्ली।

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE....................
ACC. No........................
CALL No....................
BANGALORE-1.
660782

प्रकाशकीय

हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति ऐसा होगा, जिसने राम का नाम न सुना हो और राम-कथा से परिचित न हो। क्या अमीर, क्या गरीब; क्या छोटा, क्या बड़ा; क्या शहरी, क्या ग्रामीण—सभी राम का नाम सुनकर गद्‌गद् हो जाते हैं। उनके नाम में कुछ ऐसा जादू है कि एक बार सुनकर तृप्ति नहीं होती, बार-बार सुनने को जी चाहता है।

हमारी बहुत दिनों से इच्छा थी कि राम कथा के मुख्य-मुख्य प्रसंग लेकर इस ढंग से प्रस्तुत करें कि सामान्य पढ़े-लिखे पाठक भी उन्हें आसानी से समझ सकें और उनमें रस ले सकें। इसी उद्देश्य को सामने रखकर इस पुस्तक-माला का श्रीगणेश किया गया है। 'रामायण' में पूरी राम-कथा दी हुई है। उसीमें से क्रम-बद्ध घटनाएं लेकर इस माला की पुस्तकें तैयार की गई हैं। पाठकों के लाभ और विषय की रोचकता की दृष्टि से बीच-बीच में कुछ चौपाइयां-दोहे भी डाल दिये गए हैं।

हमें विश्वास है कि यह माला पाठकों को पसंद आयगी और वे इसको घर-घर पहुँचाने में मदद देंगे।

प्रत्येक पुस्तक में कुछ चित्र भी दिये गए हैं।

—मंत्री

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.........
ACC No.........
CALL No.........
BANGALORE-1.

विषय-सूची

१.	सुखद संवाद	५
२.	बरात की शोभा	८
३.	जनकपुरी में स्वागत	१२
४.	विवाह-संस्कार	१४
५.	उसी मंडप में	१९
६.	सत्कार	२१
७.	हृदयस्पर्शी विदाई	२३
८.	वापसी	२६
९.	अयोध्यापुरी में	२८

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE....................
ACC. No......................
CALL No......................
BANGALORE-1.

राम-विवाह

: १ :

सुखद संवाद

स्वयंवर की पत्रिका लेकर महाराज जनक के दूत अयोध्यापुरी पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही उन्होंने राजद्वार पर जाकर अपने आने की खबर दी। तत्काल महाराज ने उन्हें भीतर बुलवाया।

यथाविधि अभिवादन के बाद दूतों ने राजा जनक की पत्रिका भेंट की। उसे बांचते-बांचते महाराज दशरथ इतने आनन्द-विभोर हो गए कि कई क्षण तक तो वह कुछ बोल भी न सके। संभलते ही उन्होंने आदि से अंत तक सारी पत्रिका सभासदों को सुनाई। सुनते ही सभासदों की खुशी का ठिकाना न रहा। बात-की-बात में यह खबर भरत और शत्रुघ्न ने भी सुनी। वे भी तत्काल वहाँ आ पहुंचे और उतावले होकर राम-लक्ष्मण के बारे में पूछने लगे। रामचंद्रजी द्वारा धनुष-भंग और लक्ष्मण के क्रोध की बातें सुन-सुनकर सबके हर्ष का पारावार न रहा। दोनों भाइयों की प्रसन्नता तो जैसे शरीर में समाती ही न थी। भरत के पवित्र प्रेम

पत्रिका बांचते-बांचते राजा दशरथ आनन्द-विभोर हो उठे

से सारी सभा में प्रेम की वर्षा-सी हो रही थी।

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता,
अधिक सनेह समात न गाता।
प्रीति पुनीत भरत कै देखी,
सकल सभा सुख लहेउ बिसेखी।

उपरान्त महाराज ने दूतों को पास बिठा लिया और बार-बार उनसे राम-लक्ष्मण की कुशल-क्षेम पूछने लगे।

दूतों ने वहाँ के सब समाचार सुनाए। रामचन्द्रजी ने किस प्रकार धनुष तोड़ा, किस प्रकार परशुरामजी का गर्व खंडित किया—आदि-आदि बातें उन्होंने विस्तार से बताईं, जिन्हें सुनकर सभासहित राजा प्रेम में मग्न हो गए। इसके बाद वह तुरन्त गुरु वशिष्ठ के पास पहुँचे और उनको भी वह

पत्रिका पढ़-सुनाई। वशिष्ठ बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, "पुण्यवान पुरुषों के लिए पृथ्वी सुखों से भरी हुई है। जिस प्रकार नदी समुद्र के पास जाती है, हालांकि समुद्र को नदी की लालसा नहीं है, वैसे ही सुख और सम्पत्ति बिना बुलाये धर्म-परायण व्यक्ति के पास जाते हैं।"

गुरु वशिष्ठ के यहाँ से राजा महलों में पहुँचे। राज-पुत्रों का समाचार सुनकर रानियां ऐसे प्रसन्न हुईं जैसे मोर-नियां बादलों की गरज सुनकर फूल उठती हैं। बार-बार उस पत्रिका को वे छाती से लगाने लगीं। उन्होंने ब्राह्मणों को बुलाया और आनन्दपूर्वक उन्हें दान दिया। भिक्षुओं को बुलाकर भिक्षा दी। समूची अयोध्या आनन्द-रस में सराबोर हो गई।

भुवन चारि दस भयउ उछाहू,
जनक सुता रघुबीर बिआहू।
सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे,
मग, गृह, गली सवांरन लागे॥

मंगल गीत गाए जाने लगे। अयोध्यावासी प्रेम-मग्न होकर गलियों, घरों और राज-मार्गों की सजावट करने लगे।

गावहिं सुन्दरि मंगल गीता,
लेइ-लेइ नाम राम अरु सीता।
बहुत उछाह भवन अति थोरा,
मानहु उमगि चला चहुँ ओरा॥

: २ :

बरात की शोभा

राजा दशरथ ने भरत को बरात सजाने का आदेश दिया। बात-की-बात में सारा नगर बरात की तैयारियों में लग गया। इस बरात की शोभा का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। सब रथों, घोड़ों, हाथियों और पालकियों पर चढ़-चढ़कर नगर के बाहर जमा हो रहे थे। अच्छे-अच्छे सगुन होने लगे। ऊँची अटारियों पर चढ़कर स्त्रियां थालियों में मंगल आरती लिये उन्हें देख रही थीं और नाना प्रकार के मनोहर गीत गा रही थीं। उनके आनन्द का वर्णन कौन कर सकता है!

चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नारी,
लिये आरती मंगल थारी।
गावहिं गीत मनोहर नाना,
अति आनंद न जाइ बखाना ।।

इसी बीच सुमन्त दो सुन्दर रथ ले आये। एक पर महाराज ने बड़े प्रेम से वशिष्ठ को बैठाया और दूसरे पर वह स्वयं चढ़े। उस समय वह ऐसे शोभित हो रहे थे मानों देवगुरु वृहस्पति के साथ इन्द्र हों। जब सब व्यवस्था पूर्ण हो गई तो गुरु की आज्ञा पाकर बरात चल पड़ी। देवता फूलों की वर्षा करने लगे। शहनाइयां बजने लगीं। नाना प्रकार के आनन्द-स्वर गूँजने लगे।

महाराज दशरथ के आने का समाचार पाकर राजा जनक ने नदियों पर पुल बंधवा दिये। मार्ग में ठहरने के लिए सुन्दर-सुन्दर पड़ावों का प्रबन्ध कर दिया। वहाँपर बराती लोग

गुरु की आज्ञा पाकर बरात चल पड़ी

अपनी-अपनी पसन्द के अनुसार भोजन, वस्त्र आदि पाते थे। नित नये सुखों को पाकर बराती अपने घरों को भूल गए। जब बरात मिथिला के निकट पहुँची तो नगाड़ों की आवाज सुनकर अगवानी करनेवाले उनका स्वागत करने को आगे आये। बरात को देखकर उनके हृदय में आनन्द छा गया। मिथिलापुरी की सजधज देखकर बरात के नगाड़े और जोर-जोर से बजने लगे। शहनाइयों और शंखों की ध्वनि से आकाश गूंज उठा। बरात की शोभा निहारने के लिए समूची जनकपुरी समुद्र की भाँति उमड़ पड़ी थी। मिथिला के नर-नारी पुष्प-वर्षा कर रहे थे।

यथाविधि स्वागत-सत्कार के बाद बरात जनवासे की

ओर चल पड़ी। पिता के आने का समाचार पाकर राम-लक्ष्मण आनन्द से पुलकित हो उठे। संकोचवश वे गुरुजी से कुछ कह नहीं सकते थे, परन्तु उनके मन में पिता को देखने की बड़ी लालसा थी।

पितु आगमन सुनत दोउ भाई।
हृदय न अति आनन्दु अमाई।।
सकुचन्ह कहि न सकत गुरु पाहीं।
पितु दरसन लालचु मन माहीं।।

विश्वामित्रजी उनके मन की बात जान गए और उनको लेकर जनवासे की ओर चले। महाराज ने उन्हें आते देखा तो पुलक उठे। पहले उन्होंने मुनि विश्वामित्र को प्रणाम किया, फिर दोनों भाइयों को दण्डवत प्रणाम करते देखकर उन्होंने उन्हें हृदय से लगा लिया। उस समय उनका दुःख इस प्रकार मिट गया मानो मृत शरीर को प्राण मिल गये हों।

पुनि दण्डवत करत दोउ भाई।
देखि नृपति उर सुख न समाई।।
सुत हिय लाइ दुसह दुखु मेटे।
मृतक सरीर प्रान जनु भेंटे।।

इस प्रकार सब लोग आपस में प्रेमसहित मिले। जनकपुरी में आनन्द-ही-आनन्द छा गया। पुरवासी सोचने लगे कि अब हम रामचन्द्रजी का विवाह देखेंगे। ये दोनों भाई बार-बार हमारे अतिथि हुआ करेंगे। नारियों ने जब भरत-शत्रुघ्न को देखा तो वे भरत को राम से और शत्रुघ्न को लक्ष्मण से तुलना करके उनका नाना प्रकार से वर्णन करने लगीं।

लगन से कई दिन पहले बराती आगए थे। आनन्द में व दिन कैसे बीत गए, इसका किसीको भी पता न लगा और बात-की-बात में मंगल-दायक लगन का दिन आ गया। हेमन्त ऋतु थी, अगहन का सुहावना महीना था। ग्रह, नक्षत्र और दिन सब भांति श्रेष्ठ विचारकर ब्रह्माजी ने मुहूर्त निकाला और नारदजी के हाथ लगन-पत्रिका राजा जनक के पास भेज दी, जिसको उनके गणकों ने भी यथा-विधि गणना की।

मंगल मूल लगन दिनु आवा।
हिम रितु अगहन मासु सुहावा॥
ग्रह तिथि नखतु जोगु बर बारू।
लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारू॥
पठै दीन्हि नारद सन सोई।
गनी जनक के गनकन्ह जोई॥

: ३ :

जनकपुरी में स्वागत

जनकजी ने अपने पुरोहित और मंत्रियों को बुलाया। वे सब मंगल-वस्तुएं सजाकर बरात को लेने के लिए चले। निमंत्रण पाकर राजा दशरथ ने गुरु वशिष्ठ से पूछा और कुल की सब रीतियों को सम्पन्न किया। बरात चली।

बरात के आने का समाचार पाकर इधर भी जोर-जोर से नगाड़े बजने लगे और लोग हाथी, रथ, पैदल और घोड़े सजाकर अगवानी के लिए चले।

आवत जानि बरात बर सुनि गहगहे निसान।
सज गज रथ पदचर तुरंग लेन चले अगवान॥

उस समय महाराजा दशरथ और उनके राजकुमारों का जो रूप था उसका वर्णन करना कठिन है। वे सब प्रकार से सुन्दर थे। जिस घोड़े पर रामचन्द्रजी विराजमान थे उसकी चाल ऐसी थी कि देखकर गरुड़ भी लजा जाय। वह इतना सुन्दर था, मानो कामदेव ने ही घोड़े का रूप धारण कर लिया हो।

जब बरात के चलने का समाचार पहुँचा तो अनेक प्रकार से आरती सजाकर और सब प्रकार के मंगल द्रव्य लेकर स्त्रियां, आनन्द में मग्न, परछन के लिए चल पड़ीं। उन्होंने रंग-बिरंगी सुन्दर साड़ियां पहन रखी थीं। शरीर पर नाना प्रकार के आभूषण थे। कोयल को भी लजानेवाली वाणी में वे मनोहर गीत गा रही थीं। रामचन्द्रजी का वर-वेश देखकर सीताजी की माता के मन में जो सुख हुआ उसे हजारों सरस्वती और शेषनाग भी सौ कल्पों तक नहीं कह

सकते। मंगल अवसर जानकर नेत्रों के जल को रोके हुए वे प्रसन्न मन से परछन करने लगीं। वेद और कल के आचार के अनुसार उन्होंने सब व्यवहार भली भांति किए।

जो सुखु भा सिय मातु मन देखि राम बर बेष।
सो न सकहिं कहि कलप सत सहस सारदा सेष॥

नयन नीर हठि मंगल जानी।
परिछन करहिं मुदित मन रानी॥
बेदबिहित अरु कुल आचारू।
कीन्ह भली बिधि सब ब्यवहारू॥

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA

: ४ :

विवाह-संस्कार

पंच शब्द, पंच ध्यान और मंगलगान के बाद रानी ने आरती करके अर्घ्य दिया और तब रामचन्द्रजी मण्डप की

रामचन्द्रजी मण्डप की ओर चले

ओर चले। दशरथजी अपनी मण्डलीसहित वहां विराजमान हुए। ब्राह्मण समयानुकूल शान्ति-पाठ करने लगे। रामचन्द्रजी को आसन पर बिठाकर, आरती करके, दूल्हा को देखकर स्त्रियां सुखी होने लगीं। ढेर-के-ढेर मणि, वस्त्र और गहने निछावर करके मंगल-चार गाने लगीं। देवता ब्राह्मणों का वेश धारण करके वहाँ कौतुक देखने के लिए आ गए और रघुकुलरूपी कमल को खिलानेवाले सूर्य राम का रूप निरखकर

अपने जीवन को सफल मानने लगे।

बैठारि आसन आरती करि निरखि बरु सुख पावहीं,
मनि बसन भूपन भूरि बारहिं, नारि मंगल गावहीं,
ब्रह्मादि सुरबर बिप्र बेप बनाइ कौतुक देखहीं,
अवलोकि रघुकुल कमल रबि छबि सुफल जीवन लेखहीं।

सब प्रकार की रीतियां करके महाराज जनक दशरथजी से बड़े प्रेम से मिले। दोनों महाराज इस प्रकार शोभित होने लगे कि उनकी उपमा नहीं मिल सकती। दोनों में बड़ा प्रेम पैदा हो गया। महाराज जनक दशरथजी को सुन्दर पांवड़े और अर्घ्य देते हुए बड़े आदर के साथ मण्डप में ले आए। फिर उन्होंने अपने कुल के इष्ट देवताओं के सामने वशिष्ठजी, विश्वामित्रजी, वामदेवजी, आदि ऋषियों की पूजा की और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके बाद राजा दशरथ की पूजा भी उन्होंने इस प्रकार की, मानो वह महादेव हों। उन्हींके समान उन्होंने दूसरे बरातियों की भी पूजा की। सबको उचित आसन दिये। यह सब देख-देखकर लोग बहुत ही प्रसन्न होने लगे। उसी समय वशिष्ठजी ने आदरपूर्वक शतानन्दजी को बुलाया और कहा, "आप जाकर राजकुमारी को जल्दी ले आइए।"

यह सूचना पाकर रानी और कुल की दूसरी बूढ़ी स्त्रियां मंगल गीत गाने लगीं। सखियाँ सीताजी का शृङ्गार करके मंडल बनाकर उन्हें मंडप में ले चलीं। सीताजी स्त्रियों के इस समूह में इस प्रकार दीखती थीं मानो छविरूपी स्त्रियों के समूह में साक्षात परम मनोहर सौन्दर्यरूपी स्त्री शोभायमान हो रही हो।

सोहति बनिता वृन्द महुं सहज सुहावनि सीय।
छबि ललना गन मध्य जनु सुषमा तिय कमनीय।।

उन्हें देखकर सबने मन-ही-मन प्रणाम किया। रामचन्द्रजी तो कृत्य-कृत्य हो गए। राजा दशरथ भी बहुत प्रसन्न हुए। उनके हृदय में जितना आनन्द था वह कहा नहीं जा सकता। सब नर-नारी प्रेम और आनन्द में मग्न हो गए। कुल-गुरुओं ने अवसर के अनुरूप सब रीतियाँ सम्पन्न कीं। इसके बाद गौरी, गणेश और ब्राह्मणों की पूजा की। देवता स्वयं प्रकट होकर पूजा ग्रहण करने लगे। उन्होंने आशीर्वाद दिया और अत्यन्त सुख पाया। मधुपर्क आदि जिस किसी भी मांगलिक पदार्थ की मुनि लोग चाह करते, सेवक उसी समय सोने के बर्तनों में ले आते।

आचार करि गुरु गौरि गनपति मुदित बिप्र पुजावहीं।
सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अति सुखु पावहीं।।
मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मन महुं चहैं।
भर कनक कोपर कलस सो तब लिये परिचारक रहैं।।

इस प्रकार पूजा होने के बाद मुनियों ने सीताजी की माता को बुलवाया। यह सुनकर सुहागिन नारियाँ आदरपूर्वक उन्हें लिवा लाईं। उस समय सुनयनाजी जनकजी की बाईं ओर इस तरह शोभायमान हो रही थीं, मानों हिमाचल के साथ मेना शोभित हों। उन्होंने आनन्द-विह्वल होकर रामचन्द्रजी के चरणों की पूजा की। दोनों कुलों के गुरु बार-बार दूल्हा-दुलहिन की हथेलियों को मिलाकर शाखोच्चार करने लगे। पाणिग्रहण होते हुए देखकर सब देवता और मुनि आनन्दित हो उठे। सुख के मूल दूल्हा को देखकर राजा-रानी का शरीर पुलक उठा और

हृदय आनन्द से उमग उठा। राजाओं में श्रेष्ठ महाराज जनक ने लोक और वेद की रीति के अनुसार कन्यादान किया। जैसे हिमवान ने शिवजी को पार्वती और सागर ने भगवान विष्णु को लक्ष्मी दी थीं उसी भाँति महाराज जनक ने रामचन्द्रजी को सीताजी भेंट कीं। इस प्रकार संसार में एक नई कीर्ति छा गई। रामचन्द्रजी की सांवरी सूरत ने विदेह महाराज को सचमुच विदेह कर दिया अर्थात् वे देह की सब सुध-बुध खो बैठे। विधिपूर्वक हवन करके गठजोड़ी की गई और फिर भांवरें पड़ने लगीं।

बर कुअंरि करतल जोरि साखोच्चार दोउ कुलगुरु करैं।
भयो पानिगहन बिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आनँद भरैं॥
सुख मूल दूलह देखि दम्पति पुलक तन हुलस्यो हियो।
करि लोक बेद बिधानु कन्यादानु नृपभूषन कियो॥

हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहि हरिहि श्री सागर दई।
तिमि जनक रामहि सिय समरपी बिस्व कल कीरति नई॥
क्यों करै बिनय बिदेह कियो बिदेह मूरति सावंरी।
करि होम बिधिवत् गाँठि जोरी होन लागी भावंरी॥

सब लोग उत्सुक होकर भांवरें पड़ती देखने लगे। भांवरों के बाद रामचन्द्रजी ने सीताजी की मांग में सिन्दूर भरा। उस समय ऐसा लगता था, मानों कमल को लाल पराग से अच्छी तरह भरकर अमृत के लोभ से सांप चन्द्रमा को सजा रहा हो। इसके बाद वशिष्ठजी की आज्ञा पाकर दूल्हा और दुल्हिन एक आसन पर बैठे। राम और जानकी को एक आसन पर बैठे देखकर दशरथजी के मन में बहुत आनन्द

हुआ। अपने अच्छे कर्मों के कल्पवृक्ष पर नये फूल देखकर वह बार-बार पुलक उठे। चौदह भुवनों में उत्साह भर गया। सब ने कहा, रामचन्द्रजी का विवाह हो गया। जीभ एक ही है और यह मंगल महान है। इसका वर्णन किस प्रकार हो सकता है!

बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दसरथ भए,
तनु पुलक पुनि-पुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु फल नए,
भरि भुवन रहा उछाहु राम बिबाहु भा सबही कहा।
केहि भाँति बरनि सिरात रसना एक एहु मंगल महा ॥

: ५ :

उसी मण्डप में

इसी समय वशिष्ठजी की आज्ञा पाकर जनकजी ने मांडवी, श्रुतकीर्ति और उर्मिला इन तीनों राजकुमारियों को भी बुलवाया। कुशध्वज की बड़ी कन्या मांडवी को, जो गुण, शील, सुख और शोभा की खान थी, सब प्रकार की रीतियां करके, महाराज जनक ने प्रेमपूर्वक भरतजी को ब्याह दिया। सीताजी की छोटी बहन उर्मिला का, जो सब सुन्दरियों में शिरोमणि थी, विवाह सब प्रकार सम्मान के साथ लक्ष्मणजी के साथ सम्पन्न हुआ। जिनका नाम श्रुतकीर्ति है, जो सुन्दर नेत्रोंवाली और सुन्दर मुखवाली हैं, सब गुणों की खान हैं, जिनका रूप और शील प्रकट है, राजा ने उनका विवाह शत्रुघ्न के साथ कर दिया।

तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याह साज सवांरि कै।
मांडवी स्रुति कीरति उरमिला कुअंरि लई हंकारि के॥
कुसकेतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभामई।
सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृपि भरतहि दई॥
जानकी लघु भगिनी सकल सुन्दरि सिरोमनि जानि कै।
सो जनक दीन्ही ब्याहि लषनहि सकल बिधि सनमानि कै॥
जेहि नामु श्रुतकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी।
सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उजागरी॥

इन जोड़ियों को देखकर उपस्थित लोग बहुत ही हर्षित हुए। महाराज दशरथ को ऐसा लगा, मानों वे चारों फल—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—पा गए हों। दहेज तो इतना अधिक था कि

उसका वर्णन कैसे किया जाय। महाराज दशरथ ने उस दहेज में से मांगनेवालों को, जिसे जो अच्छा लगा, दे दिया। बाकी सामान को जनवासे भिजवा दिया। इस प्रकार सबका उचित सम्मान करके महाराज जनक अपने छोटे भाई सहित हाथ जोड़कर विनयपूर्वक दशरथजी से बोले, "राजन्, आपके साथ सम्बन्ध हो जाने से अब हम सब प्रकार बड़े हो गए हैं। राज-पाट सहित हम दोनों भाइयों को अब आप बिना दाम का दास समझिए। हमारी इन लड़कियों को सेविकाएं मानकर दया करके इनका पालन कीजिए। मैंने आपको यहां बुलाया, यह मेरी धृष्टता थी, क्षमा चाहता हूँ।"

यह सुनकर सूर्यकुल के भूषण महाराज दशरथ ने अपने समधी जनकजी का और जनकजी ने महाराज दशरथ का सब प्रकार से सम्मान किया, एक-दूसरे के प्रति जो विनय प्रकट की वह कही नहीं जा सकती। दोनों के हृदय-घट प्रेम से छलक रहे थे।

करि जोरि जनक बहोरि बंधुसमेत कोसलराय सों।
बोले मनोहर बचन सानि सनेह सील सुभाय सों॥
सनबंध राजन रावरे हम बड़े अब सब बिधि भए।
एहि राज साज समेत सेवक जानिबी बिनु गथ लए॥
ए दारिका परिचारिका करि पालबी करुनामई।
अपराधु छमिबो बोलि पठए बहुत हौं ढीठ्यो कई।
पुनि भानुकुलभूषन सकल सनमान बिधि समधी किए।
कहि जात नहिं बिनती परसपर प्रेम परिपूरन हिए॥

इसके बाद राजा दशरथ जनवासे को चले और मुनि की आज्ञा पाकर सुन्दर सखियां मंगल-गान गाती हुई दूल्होंसहित दुलहिनों को लेकर कोहबर की ओर चलीं।

: ६ :

सत्कार

हँसी-खेल और विनोद के कारण वहांपर जो आनन्द और प्रेम उत्पन्न हुआ उसका वर्णन करना बड़ा कठिन है। सारा रनिवास हँसी-विलास के आनन्द में डूब गया। वहां से सलौनी सखियां वर-कन्याओं को जनवासे में ले चलीं। उस समय सारे नगर में बड़ा ही आनन्द छाया हुआ था। सब आशीर्वाद दे रहे थे--'ये चारों सुन्दर जोड़ियां चिरंजीव हों।' इस आनन्द-विनोद के बाद चारों कुमार अपनी बहुओं समेत पिताजी के पास पहुंचे। शुभ मंगल और आनन्द से सारा जनवासा उमड़ पड़ा। ठीक समय पर रसोई का प्रबन्ध किया गया और बरातियों को बुलाया गया। नाना प्रकार के षट्‌रस व्यंजन बनाए गए थे। जिस समय बराती लोग भोजन कर रहे थे, पुरवासिनें उनका नाम ले-लेकर मीठे स्वर में गालियां गा रही थीं। उन्हें सुनकर सब लोग प्रमुदित होरहे थे। इस प्रकार जनकपुर में रोज ही नए मंगल होने लगे। दिन-रात पल के समान बीतने लगे। महाराज दशरथ ऋषि-मुनियों को बुलाकर बड़े आदर के साथ सबकी पूजा करते। याचकों को नाना प्रकार की सामग्री दान में देते। हर रोज सवेरे उठकर वह राजा जनक से विदा मांगते; लेकिन जनकजी बड़े प्रेम से उनको रोक लेते।

आदर-सत्कार नित्य बढ़ता जाता था। प्रतिदिन बीसियों प्रकार से बरातियों की खातिरदारी होती थी। नगर में नित्य नवीन आनंद और उत्साह मनाया जाता था। दशरथ का

जाना किसीको भी नहीं सुहाता था ।

नित नूतन आदर अधिकाई ।
दिन प्रति सहस भाँति पहुनाई ।।
नित नव नगर अनन्द उछाहू ।
दसरथ गवन सोहात न काहू ।।

बहुत दिवस बीते एहि भाँती ।
जनु सनेह रजु बंधे बराती ।।

: ७ :

हृदय-स्पर्शी विदाई

इस प्रकार बहुत दिन बीत गए, मानों सब बराती प्रेम की रस्सी में बंध गए हों। तब विश्वामित्र और शतानन्द ने राजा जनक को समझाकर कहा, "यद्यपि आप स्नेह के वश होकर छोड़ नहीं सकते तो भी आप महाराज दशरथ को जाने की आज्ञा दीजिए।"

जनकजी बोले, "जैसी आज्ञा।" उन्होंने मंत्रियों को बुलाया और कहा, "महाराजा दशरथ जाना चाहते हैं, रनिवास में खबर कर दो।" क्षणभर में यह समाचार नगर भर में फैल गया। सब व्याकुल होकर एक-दूसरे से पूछने लगे। फिर वे इस प्रकार उदास हो गए जिस प्रकार सन्ध्या के आने पर कमल मुरझा जाता है। महाराज जनक ने पुनः बहुत-सा दहेज दिया। बरात की विदा के समाचार पाकर रानियां भी ऐसी व्याकुल हो गईं, जैसे मछलियां थोड़े जल में छटपटाने लगती हैं। वे बारंबार सीताजी को अंक में भर लेतीं और आशीर्वाद देती हुई उनको सीख देतीं, "तुम सदा अपने पति की प्यारी हो, तुम्हारा सौभाग्य अचल हो, हमारा यह आशीष है। सास, ससुर और गुरु की सेवा करना। पति का रुख देखकर उनकी आज्ञा का पालन करना।" सयानी सखियों ने भी बड़े प्रेम से और बड़ी कोमल वाणी में स्त्रियों के कर्त्तव्य समझाए। इस प्रकार सब पुत्रियों को समझा-बुझाकर रानियों ने उन्हें हृदय से लगाया। वे बार-बार भेंट करतीं और कहतीं, "ब्रह्मा ने स्त्री-जाति को क्यों बनाया ?"

पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं ।
देइ असीस सिखावन देहीं ।।
होएहु संतत पियहि पिआरी ।
चिरु अहिबात असीस हमारी ।।

सासु ससुर गुर सेवा करेहू ।
पति रुख लखि आयस अनसरेहु ।।
अति सनेह बस सखी सयानी ।
नारि धरम सिखवहिं मृदु बानी ।।

सादर सकल कुअंरि समुझाई ।
रानिन्ह बार बार उर लाई ।।
बहुरि बहुरि भेटहिं महतारी ।
कहहिं बिरंचि रची कत नारी ।।

इसी समय चारों भाई विदा कराने के लिए महल में पहुँचे। चारों राजकुमारों को देखकर सारा रनिवास आनंदित हो उठा। सासें उनकी आरती उतारने लगीं। बड़े प्रेम से उन्हें स्नान कराकर षट्रस भोजन कराए। उसके बाद रामचन्द्रजी बड़े शील और संकोच से बोले, "पिताजी अयोध्यापुरी लौट जाना चाहते हैं। उन्होंने हमें विदा के लिए भेजा है। हे माता, हमें आज्ञा दीजिए और अपने बालक जानकर हमपर सदा अपना स्नेह बनाए रखिए।" यह सुनकर सारा रनिवास उदास हो गया। उन्होंने सब कुमारियों को बड़े प्रेमसे हृदय लगा लिया और फिर उनको उनके पतियों को सौंपकर बार-बार उनकी विनती करने लगीं। रामचन्द्रजी ने भी विदा मांगकर उनको प्रणाम किया। आशीर्वाद पाकर बहुओंसहित वे वहां से चल पड़े। उस

विदा

समय चारों ओर करुणा और विरह का दृश्य छा गया। पुत्रियों से बार-बार मिलती हुई माताओं को सखियों ने इस प्रकार अलग कर दिया, जिस प्रकार तुरन्त ब्याई गाय को उसके बच्चे से अलग कर दिया जाता है। जानकीजी के पाले हुए तोते और मैना तक पुकारने लगे, "वैदेही कहाँ है ?" जो परम वैरागी कहलाते थे, उन जनकजी तक का सीताजी को देखकर धीरज छूट गया, ज्ञान की मर्यादा टूट गई और उन्होंने बेटी को हृदय से लगा लिया। बुद्धिमान मंत्रियों के बार-बार समझाने पर उन्होंने सुन्दर पालकियां मंगवाईं और शुभ मुहूर्त में कन्याओं को उनपर सवार कराया और उनको बहुत प्रकार से समझाया कि स्त्रियों के क्या धर्म होते हैं। फिर सब लोग उनको पहुंचाने के लिए साथ-साथ चले। H·00078 2

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
BANGALORE-1.

: ८ :

वापसी

इस प्रकार करुणा, विरह, प्रेम और आनन्द के इस वातावरण में जब चारों ओर शुभ सगुन हो रहे थे, बाजे बज रहे थे, राजा दशरथजी अयोध्यापुरी को चल पड़े। उन्होंने विनती करके सब लोगों को लौटा दिया, परन्तु राजा जनकजी प्रेमवश लौटना नहीं चाहते थे। दशरथजी ने उनसे फिर कहा, "हे राजन, बहुत दूर आ गए, अब लौटिए।" वह रथ से उतरकर खड़े हो गए। उनकी आँखों में प्रेम के आंसू भर आए। जनकजी हाथ जोड़कर स्नेहरूपी अमृत में भीगी वाणी में बोले, "मैं किन शब्दों में किस प्रकार आपकी विनती करूं। हे महाराज, आपने मुझे गौरव प्रदान किया।"

पुनि कह भूपति बचन सुहाए,
फिरिय महीस दूरि बड़ि आए।
राउ बहोरि उतरि भए ठाढ़े,
प्रेम प्रबाह बिलोचन बाढ़े॥
तब बिदेह बोले कर जोरी,
बचन सनेह सुधा जनु बोरी।
करऊँ कवन बिधि बिनय बनाई,
महाराज मोहि दीन्हि बड़ाई॥

इस प्रकार प्रेमपूर्वक वार्तालाप के बाद जनकजी ने मुनियों को सिर नवाया और अपने दामादों से मिले, नाना प्रकार से उनकी प्रशंसा की तथा उन्हें आशीर्वाद दिया। सब लोग परस्पर प्रेम के वश होकर बार-बार आपस में सिर नवाने लगे। अन्त

में जनकजी ने विश्वामित्रजी के चरण पकड़ लिये और बोले, "आपके दर्शन से कुछ भी दुर्लभ नहीं है। जो किसीको प्राप्य नहीं है वह अप्राप्य मुझे आपके दर्शन के कारण मिल गया है।"

इस प्रकार विनती करके तथा उनका आशीर्वाद पाकर राजा जनक लौट पड़े।

: ६ :

अयोध्यापुरी में

बीच-बीच में सुन्दर स्थानों पर ठहरती हुई तथा मार्ग के लोगों को सुख देती हुई वह बरात एक दिन शुभ वेला में अयोध्या-पुरी के समीप जा पहुँची। उनके आने का समाचार पाकर नगर में आनन्द छा गया। सब लोग अपने-अपने घरों, बाजारों, गलियों आदि को सजाने लगे। उस समय की राजमहल की शोभा का कौन वर्णन कर सकता है! उसकी सजावट देखकर कामदेव भी मोहित हो उठा। सब माताएं प्रेम के वश होकर बेसुध होने लगीं। पूजन और दान होने लगा। मंगल साज सजने लगे। मंगल-गीत गाए जाने लगे।

समय जानि गुरु आयसु दीन्हा,
पुर प्रबेस रघुकुल मनि कीन्हा।
सुमिरि संभु गिरिजा गनराजा,
मुदित महीपति सहित समाजा॥

शुभ मुहूर्त में गुरु की आज्ञा पाकर महाराज दशरथ ने नगर में प्रवेश किया। उस समय जो जय-ध्वनि हुई और वेद मन्त्रों का उच्चार हुआ वह दसों दिशाओं में सुनाई दे रहा था। बाजे बज रहे थे। पुरवासी इतने प्रसन्न थे कि वह सुख उनके मन में नहीं समाता था। उन्होंने राजा की वंदना की। स्त्रियां आरती करने लगीं और पालकियों के पर्दे उठा-उठाकर दुलहिनों को देखने लगीं।

आरति करहिं मुदित पुरनारी।
हरषहिं निरख कुँअर बरचारी॥

सिबिका सुभग ओहार उघारी ।
देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी ।।
एहि बिधि सबही देत सुख आये राजदुआर ।
मुदित मातु परिछन करहिं, बधुन्ह समेत कुमार ।।

जब वे राजद्वार पर पहुंचे तो आनन्द में मग्न होकर माताओं ने बहुओंसहित बेटों का परछन किया । अनेक अमूल्य वस्त्र-आभूषण उनपर न्यौछावर किए । इसके बाद वेद-विधि के अनुसार अर्घ्य-पांवड़े देते हुए वे उनको महलों में ले गईं । वहां उन्होंने चार बहुत ही सुन्दर सिंहासनों पर उन्हें बिठाया, आरती की और फिर अनेक वस्त्र न्यौछावर किए । सब माताएं आनन्द से भरी हुई ऐसे शोभा दे रही थीं जैसे किसी योगी ने परम तत्त्व को प्राप्त कर लिया हो, सदा के रोगी ने अमृत पा लिया हो, जन्म का दरिद्री पारस पा गया हो, अन्धे को सुन्दर नेत्र मिल गए हों, गूँगे के मुख पर मानों सरस्वती आ विराजी हो और शूरवीर ने मानों युद्ध में विजय पा ली हो ।

बस्तु अनेक निछावरि होहीं ।
भरी प्रमोद मातु सब सोहीं ।।
पावा परम तत्व जनु जोगी ।
अमृत लहेउ जनु संतत रोगी ।।
जनम रंक जनु पारस पावा ।
अंधहि लोचन लाभ सुहावा ।।
मूक बदन जनु सारद छाई ।
मानहुं समर सूर जय पाई ।।

इसके बाद राजा ने बरातियों को बुलाया और उन्हें अनेक प्रकार की वस्तुएं भेंट में दीं । आज्ञा पाकर वे अपने-

अपने घर गए। याचक लोगो ने जो कुछ मांगा, वही उन्हें मिला। उसके बाद गुरु, ब्राह्मणोंसहित राजा महल में पहुँचे। रानियों ने बड़े आदर के साथ ब्राह्मणों की पूजा की। बहुओंसहित सब राजकुमारों ने और रानियोंसहित राजा ने बार-बार मुनि विश्वामित्र की पूजा की। बोले, "हे नाथ, मेरे समान कोई सौभाग्यशाली नहीं है।" राजा ने उनकी प्रशंसा की और रानियोंसहित उनके पैरों की धूलि माथे पर चढ़ाई।

बहु बिधि कीन्हि गाधिसुत पूजा।
नाथ मोहि सम धन्य न दूजा॥
कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी।
रानिन्ह सहित लीन्हि पग धूरी॥

इसके बाद आदर के साथ उन्हें महल में उत्तम स्थान पर ठहराया। अनंतर राजा ने गुरु वशिष्ठ के चरण-कमलों की बार-बार वंदना की, फिर बड़े प्रेम से पुत्र और सारी सम्पत्ति को उनके सामने रख दिया। मुनिराज नें अपना नेग मांग लिया और बहुत प्रकार से उन्हें आशीर्वाद दिया।

सबको विदा करके महाराज अन्दर रनिवास में गए और जिस तरह विवाह हुआ था, वह सबको सुनाया। राजा जनक के गुण, शील, गौरव तथा उनके प्रेम की रीति एवं उनके ऐश्चर्य का विस्तार से वर्णन किया, जिसे सुनकर सबको बड़ी प्रसन्नता हुई। इसके बाद राजा ने कहा, "बहुएँ अभी बच्ची हैं, पराए घर आई हैं। उनको इस तरह से रखना, जिस तरह तुम्हारे नेत्रों को पलकें रखती हैं।" इस प्रकार बातें करते-करते रात हो गई और सब सोने के लिए चले। सोते समय माताएं रामचन्द्र से ताड़का-वध की कहानी सुनने लगीं

और बलैयां लेने लगीं। उन्होंने कहा, "जो कुछ हुआ है वह सब विश्वामित्रजी की कृपा से हुआ है।" रामचन्द्रजी ने भी विनयभरे वचन कहकर अपनी माताओं को खुश किया और फिर सब सो गए।

इसके बाद अयोध्या में नित्य मंगल, आनन्द और उत्सव होने लगे। मारे आनन्द के सारी अयोध्यापुरी दीवानी हो गई। दिन-दिन आनन्द अधिक बढ़ने लगा।

मंगल मोद उछाह नित, जाहिं दिवस एहि भाँति।
उमगी अवध अनन्द भरि, अधिक-अधिक अधिकाति ॥

कुछ समय इसी प्रकार आनन्द-प्रमोद में निकल गया। उसके पश्चात एक दिन शुभ मुहूर्त्त में कंकन खोले गये। उस दिन भी कम मंगल और आनन्द नहीं हुआ। ऐसे नित नये सुखों को देखकर देवता भी ललचाने लगे और ब्रह्मा से अयोध्या में जन्म पाने की प्रार्थना करने लगे।

विवाह-समारोह समाप्त होने पर विश्वामित्रजी रोज जाने का आग्रह करने लगे, पर रामचंद्रजी के स्नेह और प्रेम के कारण रुक-रुक जाते थे।

आखिर एक दिन बहुत प्रकार से आशीर्वाद देकर विश्वामित्रजी विदा हुए, इसके बाद और लोग भी विदा लेकर अपने-अपने घर चले गये।

जब से रामचंद्रजी विवाह करके घर आये तब से अयोध्या में सब प्रकार से आनंद होने लगे। भगवान राम के विवाह में जैसा उत्सव हुआ, उसका वर्णन सरस्वती और शेषजी भी नहीं कर सकते।

MAHATMA GANDHI MEMORIAL LIBRARY

5, Kumara Park (East), Bangalore-1

DATE LABLE

CL. No. O152;1 W3N56 Accn. No. H000782

This book ought to be returned on or before the date last marked below, or fines will be incurred.

Due Date	Ticket No.	Inls.	Due Date	Ticket No.	Inls.

BANGALORE-1.

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE..........................
ACC. NO..........................
CALL NO.......

Mahatma Gandhi Memorial Library
5, Kumara Park (East), Bangalore-1

BOOK CARD

CL No. 0152,1PRE W3N56 Acc. No. H.000782

Author. PREMI (Vishvambhar Sahay) ( ).

Title Ram Vivah.

Ticket No.	Issue Date	Return Date	Ticket No.	Issue Date	Return Date

0152,1PRE
W3N56
H.000782

तुलसी-राम-कथा की पुस्तकें

१. राम-जन्म
२. धनुष-यज्ञ
३. राम-विवाह
४. राम-वनवास
५. केवट-मिलन
६. भरत-भेंट
७. पंचवटी में
८. सीता-हरण
९. सुग्रीव से मित्रता
१०. सीता की खोज

आदि-आदि

प्रत्येक का छः आना

३